विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: ०३/०९/२०२०(एन.सी. ई.आर.टी .पर आधारित)

पाठ:सप्तम: पाठनाम पर्यावरण - विज्ञानम्

गद्यांश -आहूतिद्रव्याणां धूम: केवलं शारीरिकीं मानसिकीं वा शुद्धिं नातनोति अपितु पर्यावरणमपि शोधयति इति तु वैज्ञानिकैरपि स्वीकृतम् । अग्नौ समर्पितानि स्थुलानि आहुति द्रुत्याणि अग्निना सूक्ष्मरूपेण परिवर्त्यन्ते येन तेषां न केवलं परिमाणात्मकमेव अपितु गुणात्मक परिवर्तनम् जायते ।

सूक्ष्मरूपेण परिवर्तिता एते सुगन्धित द्रव्यपदार्था: सूर्यं गच्छन्ति ।पश्चात् वायुना सर्वत्र विकीर्यन्ते एवं यज्ञेन सम्पूर्ण

वायुमंडलं पवित्री क्रियते ।

अर्थ-आहुतिद्रव्यों का धुआं न केवल शारीरिक या मानसिक शुद्धि फैलाता है , बल्कि पर्यावरण को भी शुद्ध करता है यह वैज्ञानिकों के द्वारा सिद्ध है। अग्नि में समर्पित स्थुल आहुति तेजी से अग्नि से सूक्ष्मरूप में परिवर्तित होते हैं जिससे उनमें न केवल परिमाणात्मक बल्कि गुणात्मक परिवर्तन होता है।

सूक्ष्मरूप से परिवर्तित ये सुगन्धित द्रव्यपदार्थ सूर्य तक जाते हैं।बाद में हवा के माध्यम से सभी जगह फैलाए जाते हैं ।इस प्रकार यज्ञ से सम्पूर्ण वायुमंडल पवित्र किए जाते हैं।